परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी द्वारा लिए अभ्यासवर्ग : खण्ड ३

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी साधकोंको अनुभव हुईं विशेषताएं !

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

मई २०२३ तक सनातनके ३६२ ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, पंजाबी, असमिया, सर्बियन, जर्मन, नेपाली, स्पैनिश, फ्रांसीसी, इन १७ भाषाओंमें ९३ लाख ६१ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

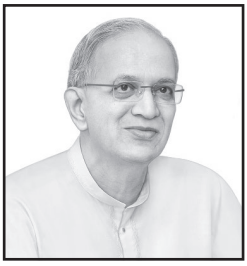

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा एवं कार्यारम्भ (वर्ष १९९८)

२. हिन्दू राष्ट्र, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर ग्रन्थ-निर्मिति

३. हिन्दुओंको धर्मशिक्षा देना, हिन्दू धर्मरक्षा एवं 'हिन्दू राष्ट्र-स्थापना' सम्बन्धी हिन्दुओंका प्रबोधन करना, इस हेतु नियतकालिक 'सनातन प्रभात'से मार्गदर्शन

४. हिन्दू राष्ट्रकी छोटी प्रतिकृति, सनातन आश्रमोंकी निर्मिति

५. साधनाके दृढ संस्कारसे युक्त सहस्रों धर्मप्रसारक तैयार करना

६. 'हिन्दू राष्ट्र-स्थापना' हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ, देशभक्त एवं सामाजिक कार्यकर्ता इ. का संगठन तथा उनका आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन !

७. भावी हिन्दू राष्ट्रका दायित्व संभालने हेतु आगेकी पीढियोंको सक्षम बनाना

(संपूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९८

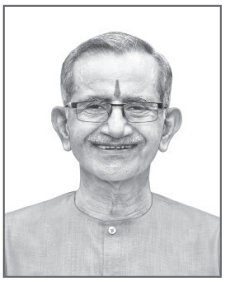

पू. शिवाजी गिरजाप्पा वटकर

पू. वटकरजीने वर्ष १९८९ से सनातन संस्थाके मार्गदर्शनानुसार साधना आरम्भ की । सत्संग लेना, धर्मप्रसारके उपक्रम चलाना आदि सेवाएं की । वर्ष २००६ में वे 'शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड' आस्थापनसे 'उपमहाव्यवस्थापक' पदसे सेवानिवृत्त हुए । वर्तमानमें वे ग्रन्थ-संकलनकी सेवा कर रहे हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' इस चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

१. श्री. अरविंद परळकर, मालाड, मुंबई. ११

* प.पू. डॉ. आठवलेजीसे हुई भेंट १२
* प.पू. डॉक्टरजीकी ध्यानमें आई विशेषताएं १३
* प.पू. डॉक्टरजीद्वारा उनकी अनुपस्थितिमें भी अभ्यासवर्ग जारी रखने हेतु कहकर साधकको तैयार करना १८
* अभ्यासवर्गमें साधकोंको हुई अनुभूतियां २०

२. पू. (श्री.) शिवाजी वटकर, सनातन आश्रम, देवद, पनवेल. २२

* प.पू. डॉक्टरजीके चैतन्यके कारण अभ्यासवर्गकी ओर आकर्षित होना २३
* अभ्यासवर्गमें आनेवाले साधकोंकी आध्यात्मिक उन्नति ५९
* प्रारंभमें अभ्यासवर्गद्वारा किया जा रहा कार्य प.पू. डॉक्टरजीद्वारा अब 'महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय'के माध्यमसे किया जाना ६०

३. श्री. कोंडिबा जाधव, फोंडा, गोवा. ६४

* प.पू. डॉक्टरजीकी सिखानेकी पद्धति, विषयका गहन अध्ययन और समर्पक विश्लेषण आश्चर्यचकित करनेवाला होना ६४

* जीवनमें 'एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक गुरु' मिलनेका सन्तोष होना तथा गुरु खोजनेके लिए भटकन रुकना ६५
* अभ्यासवर्गमें सेवाका महत्त्व बतानेके कारण वर्गमें आनेवाले जिज्ञासुओंका सेवाके लिए प्रेरित होना ६६
* प.पू. डॉक्टरजीद्वारा अभ्यासवर्गमें चूकोंका भान करवाना और तब 'साधनामें कितना सतर्क रहना चाहिए', इसका भान होना ६७

४. अधिवक्ता रामदास केसरकर, सनातन आश्रम, गोवा. ६८

* प.पू. डॉक्टरजीकी अभ्यासवर्ग लेनेकी अलौकिक पद्धति ! ७१
* प.पू. डॉक्टरजीका मराठी भाषापर प्रभुत्व ! ७२
* सैद्धान्तिक और प्रायोगिक भाग सहज ही समझमें आए, ऐसी विषयकी प्रस्तुति ! ७२
* साधकोंकी व्यक्तिगत आध्यात्मिक उन्नति अभ्यासवर्गोंका केन्द्रबिन्दु ७४
* प.पू. डॉक्टरजीकी शंकाओंका निराकरण करनेकी विशिष्ट पद्धति और लगन ! ८०

५. श्री. अभय वर्तक, सनातन आश्रम, देवद, पनवेल. ८२

* अभ्यासवर्गके स्थलपर पहुंचते ही प.पू. डॉक्टरजीका पहली भेंटमें ही अनेक लोगोंका मन जीतना ८२
* अभ्यासवर्गमें साधकद्वारा पूछे हुए प्रश्नका उत्तर इस प्रकार देना, जिससे उसे प्रोत्साहन मिलेगा ८३

६. अन्य साधकोंकी अनुभूतियां ८५

* डॉ. रूपाली जीऊ नायक भाटकार, फोंडा, गोवा. ८५
* डॉ. (श्रीमती) लिंदा महारुद्र बोरकर, फोंडा, गोवा. ८७
* श्री. गणेश दत्ताराम पेंढारकर, सावंतवाडी, जनपद सिंधुदुर्ग. ८८

अभ्यासवर्गमें केवल मार्गदर्शन करके ही नहीं, अपितु अपने आचरणसे भी 'आदर्श साधक' निर्माण करनेवाले महान विभूति : परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी !

१. अपने आचरणसे भी अध्यात्म सिखानेवाले परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी ! : 'अनेक प्रवचनकार, कीर्तनकार आदि अध्यात्मपर मार्गदर्शन करते हैं । इनमेंसे अधिकांश केवल शब्दोंके स्तरपर अर्थात ज्ञानके माध्यमसे सिखाते हैं । इसके विपरीत परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी ज्ञानके माध्यमसे सिखानेके साथ ही अपने आचरणसे भी अध्यात्म सिखाते हैं । यह शब्दोंके परेकी सीख है ।

परात्पर गुरु डॉक्टरजी विविध स्थानोंपर अभ्यासवर्गके लिए जाते समय वहांके प्रत्येक साधककी रुचिके अनुसार उसके लिए खाद्यपदार्थ लेकर जाते । उनकी इस क्रियासे साधकोंपर अनायास प्रेमभावका संस्कार होता । अभ्यासवर्ग स्थलपर पहुंचकर साधकोंके साथ वहांकी स्वच्छता करना, कुर्सियां पंक्तिबद्ध लगाना, प्रदर्शनी-कक्षमें ग्रन्थोंकी रचना करना आदि क्रियाएं वे करते । इससे साधक यह भाव रखना सीख सके कि 'हम अध्यात्ममें कितने भी ज्ञानी हों, तब भी सर्वप्रथम 'गुरुसेवक हैं ।' अभ्यासवर्गमें अपनी चूक निर्मलतासे बताना, अभ्यासवर्गके पश्चात सबके साथ भूमिपर बैठकर भोजन करना आदि क्रियाओंसे साधकोंको अहं न रखनेका पाठ मिलता । ऐसे सीखनेयोग्य अनेक सूत्र साधकोंने प्रस्तुत ग्रन्थके लिए लिखकर दिए हैं ।

२. 'जैसी कथनी वैसी करनी', यह उक्ति सार्थक करनेवाले परात्पर गुरु डॉक्टरजी ! : परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी 'जैसी कथनी, वैसी करनी' थी । इससे सम्बन्धित एक उदाहरण आज भी मेरे स्मरणमें है । परात्पर गुरु डॉक्टरजी अभ्यासवर्गोंमें सदैव कहते थे, 'ईश्वरके लिए अधिकाधिक त्याग करें । जब हम ईश्वरके लिए सर्वस्वका त्याग करेंगे, तभी ईश्वर हमें उनका

सर्वस्व देंगे ।' वर्ष १९९२ में शिष्यावस्थामें डॉ. आठवलेजीने अपने गुरु प.पू. भक्तराज महाराजजीका 'गुरुपूर्णिमा महोत्सव' मुंबईमें मनाया । इसके लिए भले ही अनेक साधकों और भक्तोंसे सहायता मिली थी, तब भी इस महोत्सवका सम्पूर्ण दायित्व परात्पर गुरु डॉक्टरजीका ही था । उस समय उनका घर गुरुपूर्णिमा महोत्सवकी तैयारीकी सेवा करनेवाले साधकोंके लिए आश्रम ही बन गया था। ये अभ्यासवर्गोंमें आनेवाले साधक थे । इस महोत्सवके लिए परात्पर गुरु डॉक्टरजीने तन, मन और धन का बहुत त्याग किया । इस महोत्सवके लिए उन्होंने साधकोंको सेवास्वरूप समाजसे अर्पण एकत्रित करने हेतु भी कहा था । महोत्सव उत्तम प्रकारसे सम्पन्न हुआ । महोत्सवके लिए अर्पण स्वरूप एकत्रित हुआ अनाज आदि कुछ मात्रामें शेष रह गया था । पश्चात डॉ. आठवलेजीने यह सर्व प.पू. भक्तराज महाराजजीके इंदौर स्थित आश्रमके लिए दे दिया । स्वयं महोत्सवके लिए इतना त्याग करनेपर भी एवं आगे स्वयंका घर 'आश्रम'के रूपमें चलाना था, तब भी उन्होंने एक भी वस्तु स्वयंके लिए नहीं रखी । उनके इस आचरणसे अभ्यासवर्गोंमें आनेवाले साधक अभ्यासवर्गोंमें शाब्दिक स्तरपर जितना सीखते, उससे अनेक गुना अधिक सीखे ! संक्षेपमें, 'अध्यात्म प्रत्यक्ष कैसे जीना चाहिए', यह परात्पर गुरु डॉक्टरजी सिखाते । इसलिए साधक उनके द्वारा बताए साधना सम्बन्धी मार्गदर्शनका आचरण करते थे और उस समय भी साधक उन्हें गुरु मानते ।

३. परात्पर गुरु डॉक्टरजीके व्यक्तित्वके विविध अंग (पहलू) : इस ग्रन्थमें अभ्यासवर्गोंमें आनेवाले साधकोंने परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी विविध विशेषताएं बताई हैं । अध्यात्मके एक आदर्श मार्गदर्शक, साधक एवं शिष्य, इस प्रकार यह ग्रन्थ परात्पर गुरु डॉक्टरजीके व्यक्तित्वके विविध पहलुओंको उजागर करता है ।

४. परात्पर गुरु डॉक्टरजीके अभ्यासवर्गोंकी असामान्य फलोत्पत्ति ! : परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा केवल कुछ वर्ष लिए गए अभ्यासवर्गोंसे अनेक व्यक्ति साधक बने और अच्छी साधना कर उन्होंने

अध्यात्ममें प्रगति की । अनेक साधक हिन्दू-संगठन, धर्मजागृति आदि कार्यों में दायित्व लेकर सेवा कर रहे हैं । सनातनके पू. शिवाजी वटकर, सनातन संस्थाके मानद विधिसम्बन्धी परामर्शदाता अधिवक्ता (वकील) श्री. रामदास केसरकर, सनातनके पूर्णकालिक धर्मप्रचारक श्री. अभय वर्तक आदि साधकोंने इस ग्रन्थके लिए लिखकर दिया है कि 'अभ्यासवर्गोंके कारण उनमें कैसे परिवर्तन हुए ?' केवल कुछ साधकोंद्वारा लिखकर दी गई जानकारी से प्रस्तुत ग्रन्थ बना है । अभ्यासवर्गोंमें आनेवाला प्रत्येक व्यक्ति यदि लिखकर दे, तो निःसन्देह एक बडा वाङ्मय ही बन जाएगा। इससे परात्पर गुरु डॉक्टरजीके अभ्यासवर्गोंकी असामान्य फलोत्पत्ति ध्यानमें आती है ।

५. अभ्यासवर्गोंमें किए जानेवाले मार्गदर्शनकी परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी पद्धति आगे सनातनके सत्संग और ग्रन्थोंके लिए उपयुक्त सिद्ध होना : परात्पर गुरु डॉक्टरजी अभ्यासवर्गोंमें अध्यात्मके विविध कृत्योंका आधारभूत अध्यात्मशास्त्र बताते, जिज्ञासुओंकी सन्तुष्टि होनेतक उनकी शंकाओंका निराकरण करते, अध्यात्मका कठिन सैद्धान्तिक भाग सामान्य लोग सहज समझ पाएं, ऐसी शैलीमें (उदा. आकृति, सारणी, प्रतिशतकी भाषामें) सिखाते, प्रायोगिक भागद्वारा साधना सिखाते और साधनाकी बाधाओंपर मार्ग खोजना भी सिखाते । परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी मार्गदर्शन करनेकी इस पद्धतिका अनुकरण आगे सनातन संस्थाद्वारा लिए जानेवाले सत्संगोंमें भी किया जाने लगा । परात्पर गुरु डॉक्टरजीद्वारा संकलित किए जा रहे ग्रन्थोंमें भी इस पद्धति का उपयोग किया जाता है । यद्यपि अब परात्पर गुरु डॉक्टरजी स्वयं अभ्यासवर्ग नहीं लेते, तथापि सनातनके सत्संग और ग्रन्थोंके कारण सहस्रों जिज्ञासु साधना कर रहे हैं और उनमेंसे अनेक अध्यात्ममें अच्छी उन्नति भी कर रहे हैं ।

६. प्रार्थना : 'जिज्ञासु और साधक प्रस्तुत ग्रन्थसे भलीभांति लाभ उठा पाएं और अपनी साधना बढाकर शीघ्रातिशीघ्र आध्यात्मिक उन्नति कर पाएं', ऐसी श्री गुरुदेवजीके चरणोंमें प्रार्थना है !'

– (पू.) श्री. संदीप आळशी (२५.१०.२०२०)